

Vol 4 Issue 9 March 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research
Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, IasiMore
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org



राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता के निकश पर रामावतार का पुनर्मुल्यांकन

मोनिका घुल्ला

असिस्टेंट प्रो, डी.ए.वी कॉलेज,अबोहर,हिंदी विभाग

सारांश :- पंजाब के प्रबुद्ध कवियों ने जिन वर्ण-विषयों पर लेखनी उठाई, उनमें विष्णु की चौदह कला सम्पूर्ण अवतार लोकरक्षक रामचन्द्र की पावन जीवन गाथा का विशिष्ट स्थान है। नर से नारायण के अंतराल को राम चरित्र की पावनता से भरा गया और जीवन के सामूहिक उत्थान का एक मात्र आधार राम-कृत्यों को स्वीकार किया गया। पंजाब में रचित राम काव्य हमारी संस्कृति का संरक्षक व संवद्धक सेतु का कार्य कर रहा है। पंजाब में रचित राम काव्य की लड़ी में गुरु गोविन्द जी द्वारा रचित रामावतार शीर्षस्थ है। रामावतार के प्रणयन का उद्देश्य न केवल पंजाबियों अपितु सम्पूर्ण भारतीयों में राष्ट्रीयता व साम्प्रदायिक सद्भावना को जागृत करना था क्योंकि उस समय की परिस्थितियाँ प्रतिकूल थीं। रामावतार में राम का स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक एकता के विराट् भावजगत् पर प्रतिष्ठित है। राम के शील में भारत का शील, राम के सौन्दर्य में भारत का सौन्दर्य, और राम के शौर्य में भारत का शौर्य अपनी चरम पूर्णता के साथ चरितार्थ हुआ है। कथा संगठन, बिंब योजना और चरित्र-चित्रण सभी के माध्यम से रामावतार का राष्ट्रीय व साम्प्रदायिक सद्भावना का स्वर मुखरित हुआ है। राम ने अपनी सेना में विविध जातियों व सम्प्रदाय के लोगों को एकत्रित करके साम्प्रदायिक सद्भावनाओं का संरक्षण किया। रामावतार के राम केवल साक्षात् अनीति रावण को जड़मूल से नहीं मिटाते अपितु सम्पूर्ण भारतीयों में नई प्रेरणा, नव्य स्फूर्ति, नूतन संस्कार को संचारित करते हैं। इस प्रकार रामावतार के राम सच्चे अर्थों में भारत के परम राष्ट्र पुरुष और उनकी लोकविधायनी दृष्टि के कारण वे साम्प्रदायिक सद्भावनाओं के संरक्षक हैं।

बीज शब्द—गुरु रामावतार, शीलराम, गोविन्द सिंह

प्रस्तावना

पंजाब के प्रबुद्ध कवियों ने जिन वर्ण-विषयों पर लेखनी उठाई, उनमें विष्णु की चौदह कला सम्पूर्ण अवतार लोकरक्षक रामचन्द्र की पावन जीवन गाथा का विशिष्ट स्थान है। वास्तव में राम चरित का यशोगन करने का मूल उद्देश्य आदर्श धारणा रही है। पंजाब तथा पंजाबेतर कवियों ने जब-जब राम के चरित्र को काव्य विषय बनाया, उनकी दृष्टि भगवान की लोक मंगलकारी रक्षक शक्तियों की ओर रही है। भारतीय समाज के समस्त आदर्शों को राम कथा में खोजा एवं ढाला गया। नर से नारायण के अंतराल को राम चरित्र की पावनता से भरा गया और जीवन के सामूहिक उत्थान का एक मात्र आधार राम-कृत्यों को स्वीकार कर लिया गया। साधारणता राम काव्य की परम्परा का आरम्भ बाल्मीकि रामायण से माना जाता है। इससे पूर्व राम कथा का कोई अस्तित्व उपलब्ध नहीं होता, किन्तु बाल्मीकि रामायण की प्रौढ़ काव्य शैली और विश्वास पुराण तथा लोक कथा में उसके बीज अवश्य थे। यह बीज उन छोटी-छोटी कथाओं के रूप में बिखरे हुए थे। बाल्मीकि ने उन सब को समेट कर कथा का एक संगठित और सुव्यवस्थित रूप प्रदान का दिया है। परन्तु पंजाब में रचित राम काव्य का वास्तविक चलन आधुनिक युग से ही माना जाता है। इससे पूर्व मध्यकाल में राम शब्द का प्रयोग परात्पर ब्रह्मा के लिए किया गया। पंजाब में रचित राम काव्य अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। अनेक सुन्दर रामायणों, नये-नये प्रयोग एवं नव्य उद्भावनाएं उस युग का धरोहर हैं। पंजाब के राम काव्य में श्रद्धा भक्ति का स्वर सुरक्षित तो है परन्तु राम के चरित्र का उद्घाटन वीर रस में भी प्रतिफलित होता है। अन्य रामायणों में जहाँ राम के दूसरे रूपों का चित्रण विस्तृत रूपों में मिलता है, वहाँ पंजाब में रचित राम-काव्य में वीर रस का चित्रण मिलता है। पंजाब में रचित राम काव्यों में गुरु ग्रन्थ साहिब के अंश, हृदयराम भल्ला का हनुमन् नाटक, हरि जी की आदि रामायण, कपूर चंद त्रिखा का रामायण, गोविन्द सिंह का रामावतार, साहिब राय का रामायण पुराण, गुलाब सिंह का अध्यात्म रामायण, रामदास का सार

रामायण, सन्तोख सिंह का बाल्मीकि रामायण, कवि कीरत सिंह का कीरत रामायण आदि उल्लेखनीय हैं। परन्तु राम कथा का आरम्भ भारतीय साहित्य के आदि कवि द्वारा रचित रामायण से होता है। राम काव्य सदैव से ही भारतीय संस्कृति का पोषक रहा है। पंजाब में रचित राम काव्य भी हमारी संस्कृति का संरक्षक व संवद्धक सेतु का कार्य कर रहा है। भारतीय संस्कृति की सांस्कृतिक विरासत इस काव्य में झलकती है। राम काव्य में राष्ट्रीय एकता का संकल्प साकार हुआ है। इस विषय में डॉ. बेदी लिखते हैं—“सिख गुरुओं का व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण जिसने पूरे भारत को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरो दिया। इससे बड़ा राष्ट्रीयता का संकल्प और क्या हो सकता है।”

पंजाब में रचित राम काव्य की लड़ी में गुरु गोबिन्द जी द्वारा रचित रामावतार शीर्षस्थ है। गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म बिहार प्रान्त के पटना नामक स्थान पर 1666 ई. को हुआ। अपने पिता के निधनोपरान्त सात वर्ष की आयु में ही वे पंजाब प्रान्त के आनन्दपुर नामक स्थान पर गुरुपदआसीन हुए और सिक्ख सम्प्रदाय के धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं पथ प्रदर्शन का दायित्व संभाला। गुरु गोबिन्द सिंह जी मननशील चिंतक, साहित्य मर्मज्ञ एवं राष्ट्रनायक थे। साहित्यिक रूचि के कारण उन्होंने अपने दरबार में 52 कवियों का आश्रय दे रखा था। स्वयं भी उन्होंने कई रचनाएं रचीं। आपका समूचा काव्य संग्रह ‘दशम-ग्रन्थ’ के नाम से प्रसिद्ध है। ‘जापु’, ‘अकाल स्तुति’, ‘विचित्र नाटक’, ‘चण्डी चरित्र’, ‘चौबीस अवतार’, ‘शब्द’, ‘सवैये’, और ‘चण्डी दी वार’ आदि मुख्य हैं। रामावतार गुरु गोबिन्द सिंह जी की रचना ‘चौबीस अवतार’ में से अलग चित्रण है, जिसे गुरु जी ने अन्य अवतारों की अपेक्षा अधिक मनोयोग से प्रस्तुत किया है। आलोच्य कृति में उन्होंने 26 प्रकरणों के 864 छन्दों में राम कथा को अपने ही ढंग से ढाला है। रामावतार का रचनाकाल 1698 ई. है। रामावतार की पूरी कथा का विभाजन बालकाण्ड से सीता स्वयंवर तक, अयोध्याकाण्ड से वनवास तक, अरण्य काण्ड से सीता हरण तक, किष्किंधाकाण्ड से बालिवध तक, सुन्दरकाण्ड से हनुमान की शोध तथा युद्धारम्भ तक, लंकाकाण्ड से सीता मिलन तक, उत्तरकाण्ड से अन्त तक इस प्रकार से किया गया है। रामावतार के प्रणयन का उद्देश्य न केवल पंजाबियों अपितु सम्पूर्ण भारतीयों में राष्ट्रीयता व साम्प्रदायिक सदभावना को जागृत करना था क्योंकि उस समय की परिस्थितियां प्रतिकूल थीं। साहित्य परिस्थितियों की उपज होता है। तत्कालीन परिस्थितियों एवं मुगल अत्याचारों के कारण जनता कष्टों और अवसादों में डूबी हुई थी। पंजाब की स्थिति शेष भागों से अधिक शोचनीय थी। अत्याचारियों के राष्ट्र प्रवेश का सिंह द्वार होने के कारण पंजाब के जनमानस के सम्मुख समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी थी। अत्याचारियों के दमन की प्रेरणा देने के लिए गुरु जी ने रामावतार की रचना की। मर्यादापुरुषोत्तम राम विश्वात्मा है, परात्पर परमात्मा के नरावतार है, साथ ही वन्दनीयां भारतभूमि के अमृत पुत्र है अतः भारत की राष्ट्रात्मा भी है। गुरु गोबिन्द सिंह जी पंजाब में राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सदभावना के प्राण फूकना चाहते थे। राष्ट्रीयता का स्वरूप मूलतः जननी, जन्म भूमि एवं मातृभाषा के प्रति अखण्ड आस्था और अपने राष्ट्र की लोकपरम्परा एवं शास्त्रमर्यादा के प्रति गहन गौरव दृष्टि की अखण्डता में व्यक्त होता है। भगवान राम का अवतार ही धरती की पुकार पर सम्पूर्ण विश्व के हृदयस्वरूप भारत देश में हुआ था। अतः गुरु गोबिन्द जी ने समय की नब्ज को परखते हुए रामावतार की रचना की, क्योंकि राम-कथा के व्यापक परिवेश में राष्ट्रीयता की सहज अभिव्यक्ति हो सकती थी।

‘रामावतार’ में राम का स्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर भावनात्मक एकता के विराट् भावजगत् पर प्रतिष्ठित है। राम के शील में भारत का शील, राम के सौन्दर्य में भारत का सौन्दर्य, और राम के शौर्य में भारत का शौर्य अपनी चरम पूर्णता के साथ चरितार्थ हुआ है। दुष्टों के संहार के लिए व संतो के उद्धार के लिए अजर, अमर और ब्रह्मा अवतार धारण किया करते हैं। प्रजानुरंजनकारी राष्ट्रनायक द्वारा शासित सर्वशक्ति, सुख सम्पन्न राज्य में ही राष्ट्रीयता का पूर्ण परिपाक संभव है। रामावतार के अन्तर्गत राम के जन्म से ही दुष्टों के संहार और साधुओं के उद्धार की प्रतिध्वनि गुंजायमान होती हैं। गुरु जी ने राम को विष्णु का अवतार मानते हुए तथा संसार के पालक के रूप में चित्रित करते हुए लिखा है—

“मास त्रयोदशी चद्यों तब सन्तन हेतु उधार।

रावण रिपु परगट भये जग आन राम अवतार।।”

इस प्रकार गुरु गोबिन्द सिंह जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि रामावतार का हेतु है—राक्षसी अत्याचारों से संतस्त धरा का उद्धार। नर रूप में वे धर्मज्ञ, नीतिज्ञ, ज्ञानवान, चरित्रवान्, दृढ़ प्रतिज्ञा और सत्य पराक्रमी हैं। उनमें शक्ति, शील और सौन्दर्य का आलोक सामान्य उत्कर्ष है। रामावतार में रीतिकाल बोध होते हुए भी समृद्धि और सामन्ती वातावरण की अपेक्षा परिवेशानुसार वीर भावना एवं चरित नायक राम का वीर रूप चित्रित हुआ है। वे राम को राजा, उदार, सुशील, भक्तवत्सल, आदि देखते हुए भी पुरातन धारणा के अनुरूप एक ऐसा अवतार मानते हैं, जो परित्राणमय साधुनाम् विनाशयत्, दुःकृताम् धरती पर अवतरित होते हैं। उन्होंने बिम्बात्मक शब्दावली के माध्यम से रावण की विकरालता का वर्णन किया है कि रावण दस मुखों से विभिन्न कार्य कर रहा है। एक मुख से वो शिव का जाप कर रहा है, दूसरे से सीता का सौन्दर्य को देख रहा है, तीसरे से वीरों को ललकार रहा है, चौथे से मारो मारो पुकार रहा है, पांचवे से हनुमान को अधीरता से देख रहा है, छठे से विभीषण को देख कर क्रुद्ध हो रहा है, सातवें से राम लक्ष्मण को देख रहा है, आठवां मुंह इधर उधर घुमा रहा है, नौवे से सब को देख रहा है, दसवां मुख रोष से भरकर लाल हो रहा है। परन्तु श्री राम अपनी वीरता से रावण की बुराइयों का अन्त कर देते हैं। गुरु गोबिन्द जी श्री राम के वीर अवतार के विषय में लिखते हैं कि—

“राम परम पवित्र है, रघुवंस के अवतार।

दुष्ट दैतन के संघारक संत प्रान अधार।।”

कवि राम को राष्ट्रनायक के उन्नायक के रूप में चित्रित करना चाहते थे। कवि को राम का वही स्वरूप ग्राह्य है, जिसमें राम के बाण अत्याचार और अन्याय की टक्कर में निरन्तर विजयी होते हैं। इसीलिए इस रचना में राम के वीर रूप को प्रतिष्ठित करने का ही प्रयास कवि द्वारा ही सर्वत्र रहा है—

“स्त्री रघुनंदन को भुज ते जब घोर सरासरबन उड़ाने।

भूमि अकाश पतार चहुं चक पूर रहे नही जात पछाने।।”

अयोध्या से एकाकी चलकर केवल अनुज और अर्द्धांगिनी के साथ राम का वन वन भटकना, राष्ट्रीय जीवन की

विघटनकारी परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करके सारी पृथ्वी को राक्षसहीन करने का दृढ़ संकल्प करना वानर भालुओं की वन्य-जातियों के संगठन द्वारा आत्मनिर्भर राष्ट्रसेना का संगठन कर राक्षस संहार के द्वारा लोकमंगलकारी सर्वसुख वैभव सम्पन्न राज्य की स्थापना करना—यह जिस नाटकीय वैविध्य के साथ रामावतार में वर्णित है, वह अनेक अंशों से राष्ट्रीय दृष्टिकोण का परिचायक है। कथा संगठन, बिंब योजना और चरित्र-चित्रण सभी के माध्यम से रामावतार का राष्ट्रीय व साम्प्रदायिक सद्भावना का स्वर मुखरित हुआ है। राम और रावण के युद्ध के समय राम एक राष्ट्रनायक और वीरयोद्धा के रूप में चित्रित हुए हैं—

“ जुट्टे बीरं। छुट्टे तीरं। दुक्की डालं। कोहे कालं।।
थके डोलं। बके बोलं। कच्छे सस्त्रं। अच्छे अस्त्रं।।
झुमे सूरं। घुम्मे हूरं। चक्के चारं। बक्के मारं।।
भिद्धे बरमं। छिच्छे चरमं। तुट्टे खग्गं। उट्टे खग्गं।।”

सुग्रीव सीता की खोज के लिए वानरों को विभिन्न दिशाओं में भेजते समय विषदता के साथ देश के जिन विविध प्राकृतिक स्थलों का विस्तृत निर्देश और संकेत करते हैं, उनमें तो सारे देश का ही नहीं जैसे सारे संसार का भौगोलिक परिचय सार रूप में आ गया है। यह भी इस देश की राष्ट्रीयता के पीछे विद्यमान विराट् भौगोलिक पृष्ठभूमि का द्योतक है। भगवान राम को आसेतुहिमाचल भारतभूमि से अनुराग है, उसके कण-कण में उनका हृदय रमता है। अयोध्या, मिथिला, तीर्थराज प्रयाग, चित्रकूट दण्ड-कारण्य, किष्किंधा सुबल, लवण सागर भी उन्हें प्रिय हैं। इस प्रकार वे सांस्कृतिकता के प्रति अटूट प्रेम को व्यक्त करते हैं। रामावतार में लंकाकाण्ड में युद्ध-प्रसंगों का आयोजन भी राम को राष्ट्रनायक व संस्कृति के पोषक के रूप में ही चित्रित करने के लिए ही किया गया है—

“रोष भरे रणमो रघुनाथ कमान लै बाण अनेक चलाए।

बजि गजी गजराज घने स्थराज बने करि रोष उड़ाए।।”

राम का संतपालक और दुष्टनाशक छवि कवि अपने युग में प्रतिष्ठित करना चाहते थे। क्योंकि देश का राष्ट्रनायक व साम्प्रदायिक सद्भावनाओं का द्योतक एक वीर पुरुष व सन्त हो सकता है। वह श्री राम के संत और सिपाही के रूप को समाज के सम्मुख प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। इसलिए अपनी कथा योजना में कवि रामजन्म के राक्षसों को नष्ट करने वाले उद्देश्य को सदा प्रमुख रखता है। राम को वन में भेजकर राक्षसों को नष्ट कराने के लिए ब्रह्मा स्वयं मंथरा को अयोध्या भेजते हैं—

“मंथरा इक गान्धवी ब्रह्मा पठी तिह काल।

बज साज सणै चढ़ी सभ सुभ्र घडल उताल।।”

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने रामवंश की उसी परम्परा को जीवित रखते हुए शक्ति और भक्ति का संदेश दिया। खड़गहस्त होकर शक्ति की उपासना करके अत्याचार का प्रतिकार किया तथा श्री राम के जीवन के आदर्शों को प्रतिपादित किया। उन्होंने कभी अपने आप को ‘अवतारी पुरुष’ नहीं कहा—

“जो जो हम को परमेस उचरि हैं।

ते जन घोर नरक में परि हैं।।”

उन्होंने संतों फकीरों, महात्माओं, और अकाल पुरुष परमपिता श्री राम के आदर्शों पर चलने का संदेश दिया। वे स्वयं परमवीर योद्धा थे। एक और वीरत्व और दूसरी ओर भक्ति भावना की भाव गंगा उनके हृदय में निरंतर प्रवाहित होती रहती थी। साम्प्रदायवाद और जातिवाद के वे घोर विरोधी थे। भारत की समन्वित संस्कृति के पोषक थे। मुगल शासकों के अत्याचारों और दमन चक्रों का उन्होंने घोर प्रतिकार किया किन्तु न तो उनके प्रति और न ही इस्लाम के प्रति उन के मन में कभी किसी भी प्रकार का विकार आया। दया, क्षमा और करुणा भाव से उन्होंने सब को गले लगाया। ऐसे ही गुणों से उन्होंने अपने रामावतार के राम को पूरित किया है। राम ने अपनी सेना में विविध जातियों व सम्प्रदाय के लोगों को एकत्रित करके साम्प्रदायिक सद्भावनाओं का संरक्षण किया। यहां तक की जब श्री राम असुरों का संहार करते थे तो साथ ही साथ उन दैत्यों का उद्धार भी कर देते हैं। उनके मन में असुरों व दैत्यों के प्रति कोई अनुचित भावना नहीं थी। गुरु जी स्वयं रामचरित के श्रवण-पठन के महात्म्य का वर्णन करते हुए लिखा है—

“ जो इह कथा सुनै अरु गावै। दुख पाप तिह निकट न आवै।।

बिसन भगति की ए फल होई। आधि व्याधि छवै सकै न कोई।।”

राष्ट्र लक्ष्मी के रक्षार्थ देशभक्त का रुधिर खौल उठना भी राष्ट्र प्रेम के ओजपक्ष के उभार का द्योतक है। अनाचारी के प्रति इसी राष्ट्रीय रोष का ओजभरा स्वर गंभीर सांस्कृतिक मर्यादा के भीतर रचित है। विन्ध्य और हिमालय हमारे राष्ट्रीय गौरव एवं स्वाभिमान तथा गंगा यमुना सिंधु सरयू हमारे स्वर्णिम इतिहास के ज्वलन्त प्रतीक हैं। राम द्वारा ताड़का, सुबाहु, मारीच, मेघनाथ, कुम्भकर्ण और रावण आदि के वध द्वारा गुरु गोबिन्द जी अपनी उक्ति “सवा लाख से एक लडाउ, तबै गोबिन्द सिंह नाम कहाउ” को महामानव राम पर चरितार्थ करके सम्पूर्ण जनता में साधारणीकृत किया है।

इस प्रकार पंजाब में रचित रामकाव्य की ओर लोकनेता कवियों की रुचियों का यही मूल कारण है कि राम चरित्र अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। इसी भाव से प्रेरित होकर गुरु जी ने राम को अपनी रचना रामावतार का चरित नायक बनाना स्वीकार किया। विभिन्न कोणों से राम का जीवन आदर्शों का शिक्षक बन व्यक्ति, परिवार, समाज, लोकधर्मों में इन गुणों का उदय करने लगा। यथा कर्त्तव्य, कर्मशील जीवन रामकथा के संदर्भों से उजागर हुआ है और मध्यकालीन पंजाबी जाति जो विदेशियों के अत्याचारों एवं अनीति के पाश बद्ध में स्वतंत्रता के लिए तड़पती और जूझती रही थी, सूर्य रूपी राम के साक्षात्कार द्वारा निद्रा त्याग न केवल सद्बुद्धि में परिवर्तित हुई बल्कि अनुचित का विरोध करने में समर्थ हो गई। क्योंकि रामावतार के राम केवल साक्षात् अनीति रावण को जड़मूल से नहीं मिटाते अपितु सम्पूर्ण भारतीयों में नई प्रेरणा, नव्य स्फूर्ति, नूतन संस्कार को संचारित करते हैं। इस प्रकार रामावतार के राम सच्चे अर्थों में भारत के परम राष्ट्र पुरुष और उनकी लोकविधायनी दृष्टि के कारण वे साम्प्रदायिक सद्भावनाओं के संरक्षक हैं। रामावतार के राम जन जन के श्री राम हैं, दीनबन्धु हैं, पतित पावन हैं, असुर संहारक हैं, मुक्तिदायक हैं

व प्रजापालक है। अतः रामावतार राष्ट्रीयता व साम्प्रदायिकता की परम भव्य गाथा है। इस रचना के माध्यम से गुरु जी अपनी इस वाणी को प्रचारित व प्रसारित करते हुए न केवल भारतीय अपितु सम्पूर्ण संसार की जनता को राम के सन्त व सिपाही रूप को आत्मसात् करने के लिए प्रेरित करते हुए लिखते हैं कि—

“देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहू न टरौ।
न डरौ अरि सौ जब आइ लरौ, निसचै कर अपनी जीत करौ।।”

सूची—

- 1—गुरु गोबिन्द सिंह और उनकी हिंदी कविता, डॉ. महीप सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
- 2—गुरुमुखी लिपि उपलब्ध हिंदी भक्ति साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, हरमहेन्द्र सिंह बेदी,
- 3—जन जन के राम, डॉ. रमा शंकर पाण्डेय, नीलकण्ठ, मनु प्रकाशन दिल्ली
- 4—रामकथा विविध आयाम, सम्पादित डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. रामनाथ त्रिपाठी अभिनंदन समिति द्वारा प्रकाशित
- 5—पंजाब का हिंदी साहित्य, मनमोहन सहगल
- 6—पंजाबी साहित्य की इतिहास रेखा, मोहन सिंह
- 7—पंजाबी राम काव्य, भाषा विभाग पटियाला
- 8—हिंदी साहित्य का प्रमाणिक इतिहास, कृष्ण भावुक
- 9—हिंदी साहित्य का इतिहास, हुकुमचंद राजपाल
- 10—पंजाबी प्रान्तीय हिंदी साहित्य का इतिहास, चंद्रकान्त वाली
- 11—पंजाब का हिंदी साहित्य, शमशेर सिंह अशोक
- 12—पंजाब का इतिहास, कृपाल सिंह नारंग



मोनिका घुल्ला
असिस्टेंट प्रो, डी.ए.वी कॉलेज, अबोहर, हिंदी विभाग

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org